an>

title: Regarding difficulties faced by children of migrant labourers to get school education.

डॉ. प्रीतम गोपीनाथ मुंडे (बीड): माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से मराठवाड़ा क्षेत्र के बहुत गंभीर मसले पर आपका ध्यान आकर्षÂित करना चाहती हूं। मराठवाड़ा क्षेत्र में काफी पैमाने पर खेत में काम करने वाले मजदूर रहते हैं। मेरे संसदीय क्षेत्र बीड में यह संख्या लगभग छः लाख के आसपास है। पिछले चार साल से मराठवाड़ा कुदरत के कहर सूखे और भारी बर्फबारी को झेल रहा है। इसके कारण शुगर फैक्टियों की हालत बहुत खराब है। बहुत सी फैक्टियां एफआरपी तक नहीं दे पाती हैं। इस वजह से मजदूर अन्य राज्यों में काम ढूंढ रहे हैं। मजदूर दूसरी जगह जाकर काम की तलाश करते हैं तो इसका सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चों की एजुकेशन पर होता है क्योंकि वह अपने बच्चों को लेकर हर जगह नहीं जा सकते हैं।

मैं आपके माध्यम से उनके बच्चों की शिक्षा में आ रही अड़चनों को देखते हुए दरख्वास्त करना चाहती हूं, पहले महाराÂष्ट्र राज्य सरकार साखर शाला नाम से कुछ स्कूल इन मजदूर के बच्चों के लिए चलाती थी। किसी वजह से आज ये स्कूल बंद हैं। मेरा अनुरोध है कि केंद्र और राज्य सरकार साथ मिलकर रेजीडेंशियल स्कूल शुरु करे। लोकनेता गोपीनाथ मुंडे जी का सपना था, वह हमेशा कहते थे, मैं यह वाक्य मराठी में कहना चाहती हूं - मलाऊ उसतोड़ कांगाराच्छा मुलावा हतात कोइता नहीं लेखनी रइछे।

इसी तरह से उनका सपना था कि गन्ने के खेत में काम करने वाले जो मजदूर हैं, उनके बच्चों के हाथ में दराती या हसिया न रहकर कलम मिले, मजदूर के बच्चे भी जिंदगी में आगे बढ़ें, वे पढ़ें-लिखें, मजदूर का बच्चा मजदूर का बच्चा ही न बना रहे, वह भी आगे चलकर डॉक्टर, इंजीनियर कुछ बन सके। उनके इस सफर की पहली नींव रखने के लिए ऐसे स्कूलों को आधार बनाकर मैं आज आपके माध्यम से केन्द्र सरकार से निवेदन करती हूं।

माननीय अध्यक्ष:

श्री भैरों प्रसाद मिश्र,

श्री सी.पी.जोशी,

कुंवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चंदेल,

श्री सुधीर गुप्ता और

श्री रोड़मल नागर को डॉ प्रीतम गोपीनाथ मुंडे द्वारा उठाए गए विषÂय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।